धरुण आङ्गिरसः।अग्निः। त्रिष्टुप्।

प्र वेधसे क्वये वेद्याय गिरं भरे युशसे पूर्व्याय।

घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवौ रायो धर्ता धरुणो वस्वौ अग्निः॥ ५.०१५.०१

वेधसे- मेधाविने। कवये- सूक्ष्मदिर्शने। वेद्याय- ज्ञातव्याय। पूर्व्याय- पुराणाय। यशसे-कीर्तिमते। गिरम्- मन्त्रम्। भरे- धारयामि। घृतप्रसत्तः- पूतनवनीतोपलक्षितपूतावगमनेन प्रसन्नः। असुरः- प्राणदः। सुशेवः- सुखकरः। रायः- सम्पदः। धर्ता- धारकः। धरुणः- हविषां धारकः। वस्वः- शरण्यः। अग्निः- पावकः सर्वभूतिहितकतुः॥१॥

ऋतेने ऋतं धरुणं धारयन्त युज्ञस्यं शाके पर्मे व्योमन्। दिवो धर्मन्धुरुणे सेदुषो नृञ्जातैरजाताँ अभि ये नेनुक्षुः॥ ५.०१५.०२

धरुणे- धारके। दिवो धर्मे- स्वर्गे। सेदुषः- निषण्णान्। नृन्- नेतृन्। अजातान्- जन्मरिहतान् देवान्। जातैः- जन्मसिहतैर्मर्त्यैः। ये। अभि- आभिमुख्येन। ननक्षुः- व्याप्नुवन्ति। ते। यज्ञस्य-दानस्य देवपूजायाः सङ्गतिकरणस्य। शाके- कर्मणि। परमे व्योमन्। ऋतेन- प्रकृतिनियत्या। धरुणम्- धारकम्। ऋतम्- धर्मम्। धारयन्त- अधारयन्॥२॥

अङ्गोयुर्वस्तन्वस्तन्वते वि वयो महद्रुष्टरं पूर्व्याय।

स सुंवतो नर्वजातस्तुतुर्यात्सिङ्कं न कुद्धमुभितः परि ष्ठः॥ ५.०१५.०३

तन्वः- स्वतन्ः। अंहोयुवः- अंहसा वियोजिका यजमानाः। पूर्व्याय- पुराणायाग्नये। महत्। दुस्तरम्। वयः- हव्यम्। वि तन्वते- विस्तारयन्ति। सः। संवतः- सङ्गतान्शत्रृन्। नवजातः- अभिनवः। तुतुर्यात्- हिंस्यात्। कुद्धम्। सिंहम्। न- इव। अभितः- परितः। ष्ठः- अतिष्ठन्॥३॥

मातेव यद्भरसे पप्रथानो जनंजनं धायसे चक्षसे च।

वयौवयो जरसे यद्दर्धानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि॥ ५.०१५.०४

पप्रथानः- प्रख्यातः। मातेव- जननीव। धायसे- धारणायै। चक्षसे- दर्शनाय। जनंजनम्। भरसे-धारयसि। दधानः- धारयन्। वयोवयः- अन्नम्। जरसे- जाठराग्निरूपेण जीर्णं करोषि। त्मना-आत्मना। विषुरूपः- बहुरूपः। सर्वान्। परि- परितः। जिगासि- गच्छसि ॥४॥

वाजो नु ते शर्वसस्पात्वन्तमुरु दोघं धुरुणं देव रायः।

पुदं न तायुर्गुह्य द्धांनो मुहो राये चितयुन्नत्रिमस्पः॥ ५.०१५.०५

देव- द्योतक। ते- तव। शवसः- बलस्य। अन्तम्- सम्पूर्तिरूपम्। उरुम्- विस्तीर्णम्। दोघम्-दोग्धारम्। रायः- सम्पदः। धरुणम्- धारकम्। वाजः- अन्नम्। नु- क्षिप्रम्। पातु- रक्षतु। तायुः- स्तेनः। पदम्- द्रव्यम्। गुहा- रहस्यस्थाने। न- यथा धारयति तथा। दधानः। महः-महते। राये- धनाय। अत्रिम्- स्वोपासकम्। चितयन्- ज्ञापयन्। अस्पः- अपूरयः॥५॥